



४ टिप्पणीयाँ लिखिए :

(अ) मनीषा का चरित्र।

अथवा

‘करफ्यू’ नाटक में कविता का चरित्र।

(ब) ‘सीमा-रेखा’ शीर्षक की सार्थकता।

अथवा

‘आवाज का नीलाम’ एकांकी का उद्देश्य।

५ ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

(क) “सुन्दर है, विचित्र है, औरों की तरह नहीं है। सब यहीं से शुरु करते हैं, फिर तरह-तरह की बातें बनाते है। कोई राजनीति की, कोई आर्ट की, कोई औरतों की आजादी की। साले बदमाश, अपने-अपने बुने हुए जाल फेंकते हैं सब..”

अथवा

“हर कायर आदमी को एक सहारा चाहिए। बहाना चाहिए, इसके पहले कि वो चूहे से शेर बन सके।”

(ख) “गरीब लाख ईमानदार हो तो चोर है, डाकू है और अमीर यदि आँखों में धूल झोंककर लाखों पर हाथ साफ़ कर जाए, चन्दे के नाम पर हजरो...!”

अथवा

“पर इस नाते-रिश्ते से उपर भी तो हम कुछ है, हम स्वतंत्र भारत की प्रजा हैं, हम स्वतंत्र भारत की प्रजा हैं, हम एक स्वतंत्र देश के नागरिक हैं हम इन्सान है।

(ग) “तुम तुम हो, मैं मैं हूँ – यही तो कभी स्वीकार नहीं किया, तभी तो इतने झूठों की जरूरत पडी।”

अथवा

“जी हाँ! और इस आवाज के लिए अपने को बर्बाद कर दिया था, लेकिन जनता नये इंसान की आवाज नहीं सुनना चाहती। उसे सच्चाई की आवाज नहीं चाहिए। उसे चाहिए शौख कवर, भड़कीले चित्र, रंग-बिरंगे विशेषांक...”